अध्याय - 11

कला क्षेत्र में परिवर्तन

भारत की संस्कृति सम्पन्न एवं विविध है। प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास के विभिन्न कालों में भारत के लोगों ने चित्रकला स्थापत्य, नृत्य, संगीत, साहित्य के क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की थीं। अठारहवीं सदी में देश के भीतर राजनीतिक विघटन का दौर चल रहा था। राजाओं एवं नवाबों की स्थिति डावांडोल एवं वित्तीय दृष्टि से कमजोर हो गई थी। फलतः कलाकार एवं साहित्यकार राजकीय संरक्षण से वंचित हो गए। सभी तरफ सांस्कृतिक पतन के लक्षण दिखाई दे रहे थे। पलासी की लड़ाई के बाद जो नई औपनिवेशिक शक्ति उभर रही थी, उनका प्रभाव देश के जीवन के कई पहलुओं पर पड़ रहा था। इस दौरान कला के क्षेत्र में भारतीय एवं यूरोपीय शैली एक–दूसरे के निकट आई।

इस इकाई में हम इस बात का अध्ययन करेंगे कि औपनिवेशिक कला के अंतर्गत चित्रकला, स्थापत्य एवं साहित्य के क्षेत्र में किस प्रकार के परिवर्तन हुये। इन परिवर्तनों को हम उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रवाद से जुड़ाव की पृष्ठभूमि में देखने का प्रयास करेंगे।

© RSTPB WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED

vkifuof'kd dyk

औपनिवेशिक कला में अनेक यूरोपीय कलाकार अंग्रेज व्यापारियों एवं अधिकारियों के साथ भारत आये और उनके संरक्षण में अपने कला रूपों का प्रदर्शन किया। ये कलाकार चित्रकारी की नई शैलियों, विषयों, परम्पराओं एवं तकनीकों की भारत में शुरुआत की। इनके द्वारा बनाये गये चित्रों को यूरोप के देशों में काफी लोकप्रियता मिली। क्योंकि इन चित्रों के माध्यम से उन्हें विदेशों में भारत की छवि को दिखाने का अवसर मिला।

यूरोपीय चित्रकार यथार्थवाद के दृष्टिकोण को लेकर भारत आये। यह दृष्टिकोण इस विचार पर आधारित था कि कलाकार अपनी आँखों से जो कुछ देखता है उसे उसी रूप में चित्रित करनी चाहिए। ताकि चित्र वास्तविक और असली जैसी दिखे। ये कलाकार तैलचित्र

की नई तकनीक को भारत में लाए। उनके द्वारा बनाये गये विभिन्न विषयों के चित्रों में ब्रिटेन की सांस्कृतिक श्रेष्ठता को दर्शाया गया है। आइए हम औपनिवेशिक चित्रकला के कुछ रूपों का अध्ययन करेंगे।

Hkkjr ds Hkwn`';ksa dk fp=.k

कुछ ब्रिटिश चित्रकारों ने भारत के भूदृश्यों की खोज में देश के विभिन्न क्षेत्रों की यात्राएँ कीं दरअसल, ये चित्रकार भारत को एक आदिम देश साबित करने के लिए यहाँ की सांस्कृतिक विविधता को दिखाना चाहते थे। उन्होंने ब्रिटेन द्वारा भारत में जीते गये क्षेत्रों की कुछ मोहक तस्वीरें बनाईं।

fp= 1 & Vkel Mfu;y }kjk cuk;k x;k xkthiqj esa xxk ds fdukjs fLFkr [kMgj fp= ¼b- 1791½

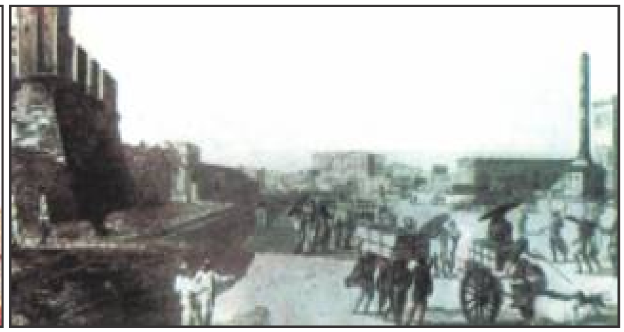

fp= 2 & Vkel Mfu;y ,oa fofy;e Mfu;y }kjk cuk;k x;k dydRrk fLFkr Dykbo LVhV ¼b- 1786½

चित्र 1 पर नजर डालिए। इस चित्र में गुजरे जमाने की टुटी–फूटी भवनों एवं इमारतों के खंडहर दे रहे हैं। इसमें एक ऐसी सभ्यता के अवशेष दिखाई जा रही है, जो अब पतन की ओर अग्रसर है। चित्र 2 को देखें। इसमें चौड़ी सड़कें तथा यूरोपीय शैली में बनाई गई विशाल एवं भव्य इमारतें दिखाई दे रही हैं। चित्र 1 एवं 2 को देखने पर आपको कोई अंतर दिखता है? हाँ, इनमें भारत के परम्परागत जीवन एवं ब्रिटिश शासन के अंतर्गत भारतीय जीवन में अंतर को दिखाने का प्रयास किया गया है। चित्र 1 में भारत के परम्परागत जीवन को पतनोन्मुख एवं गतिहीन दिखाया गया है। जबकि चित्र 2 में ब्रिटिश शासन के तहत भारत के आधुनिकीकरण की छवि दिखाई गई है। डेनियल बंधुओं द्वारा **mRdh.kZ fp=ksa** की **vyce** को ब्रिटेन के लोग बड़ी उत्सुकता के साथ खरीदते थे। क्योंकि वे भारत में ब्रिटिश राज्य को जानना चाहते थे।

> **mRdh.kZ fp=&ydM+h ;k /kkrq ds Nkis ls dkxt ij cuk;s x;s fp=A**
> **vyce &fp= j[kus dh fdrkc**

:ifp=.k

औपनिवेशिक चित्रकला की एक महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय शैली **:ifp=.k ¼Nfo fp=.k½** थी। भारतीय राजे–रजवाड़े तथा ब्रिटिश लोग अपने शक्ति एवं सत्ता तथा धन–सम्पदा के प्रदर्शन करने के लिए **fdjfep** पर अपनी तस्वीरें बनवाईं। पूर्व के समय में छवि चित्र छोटे आकार में बनाई जाती थी। किन्तु औपनिवेशिक काल में बनाये गये छवि चित्र आदमकद होते थे।

> **:ifp=&fdlh 0;fDr dk ,slk fp= ftlesa mlds psgjs ,oa gko&Hkko ij fo'ks"k tksj fn;k x;k gksA fdjfep&xk<k ;k eksVk diM+k ftl ij fp= mdsjk tkrk FkkA**

fp= 3] 4 & ;kgku tkQuh }kjk cuk;k x;k :ifp= ¼1784½

रूपचित्रण शैली की लोकप्रियता को देखते हुये अनेक यूरोपीय चित्रकार काम की तलाश में भारत आये। 1780 ई. में भारत आये यूरोपीय चित्रकार योहान जोफनी द्वारा बनाया गया चित्र 3 एवं 4 रूपचित्रण के कुछ उदाहरण हैं। इन चित्रों में भारतीय नौकरों को अपने अंग्रेज मालिकों को सेवा करते हुये दिखाया गया है। इनमें भारतीयों की हैसियत को दीन–हीन एवं कमतर दिखाने के लिए धुंधली पृष्ठभूमि का उपयोग किया गया है। जबकि अंग्रेज मालिकों को श्रेष्ठ साबित करने के लिए उन्हें कीमती परिधान पहने रोबीले एवं शाही अंदाज में दर्शाया गया है ।

अंग्रेजों के देखा–देखी कई भारतीय राजा और नवाब भी यूरोपीय कलाकरों से अपनी

आदमकद रूपचित्र बनवाये। जार्ज विलिसन द्वारा बनाया गया चित्र 5 अर्काट के नवाब मोहम्मद अली खान का आदमकद रूपचित्र है। चित्र को देखने से आप समझ सकते हैं कि नवाब ने अपने शाही रौब–दाब को किस तरह दर्शाया है। जबकि नवाब अंग्रेजों से पराजित होकर उनके पेंशनभोक्ता बन गये थे। क्योंकि वे अंग्रेजों की सांस्कृतिक श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुये उनकी शैलियों एवं परम्परा को अपनाना चाहते थे।

fp= 5 & tktZ fofYklu }kjk cuk;k x;k vkdkZV ds uokc eksgEen vyh [kku dk rSyfp= ¼1775½

,frgkfld ?kVukvksa dk fp=.k

fp= 6 & Ýkalhl gSeu }kjk cuk;k x;k rSyfp= ¼1762½

औपनिवेशिक चित्रकला की एक अन्य शैली 'इतिहास की चित्रकारी' थी। भारत में अंग्रेजों की जीत ब्रिटिश चित्रकारों के लिए चित्रकारी की एक प्रमुख विषयवस्तु थी। चित्र 6 एवं 7 ऐतिहासिक धटनाओं पर आधारित चित्रकारी का उदाहरण है। इकाई 2 में आप पढ़ चुके हैं कि अंग्रेजों ने पलासी के युद्ध में सिराजुद्दौला को पराजित कर मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाया था। चित्र 6 में आप देख सकते हैं कि इसमें मीर जाफर और उसके सैनिकों द्वारा पलासी युद्ध के बाद लार्ड क्लाइव की आगवानी करते हुये दिखाया गया है।

fp= %& 7 jkcj dj ikVj }kjk cuk;k x;k rSyfp= ¼1800½

चित्र 7 में श्रीरंगपटनम् के उस प्रसिद्ध लड़ाई को दिखाया गया, जिसमें मैसूर के शासक टीपू सुल्तान की बुरी तरह पराजय हुई थी। चित्र में युद्ध के दृश्यों को आप देख सकते हैं। इसमें अंग्रेज सैनिक टीपू के सैनिकों का कत्लेआम कर रही है और टीपू के किले पर ब्रिटिश झंडे को फहरा रही है। ब्रिटिश चित्रकारों द्वारा ऐसे चित्र बनाने के पीछे मकसद था कि वे अंग्रेजों को शक्तिशाली साबित कर सके। ताकि अंग्रेजों की जीत जनता के मन में बना रहे।

ik'pkR; fp=dkjksa us vxzstksa dh J"Brk dks n'kkZus ds fy, fp=dyk dh dkSu&lh fo"k;] 'kSyh ,oa ijEijk dks viuk;kA d{kk esa bl dh ppkZ djsaA

njckjh dyk vkSj LFkkuh; dykdkj

भारतीय राजदरबार के संरक्षण में काम करने वाले स्थानीय कलाकारों ने साम्राज्यवादी कला शैली को किस प्रकार चुनौती दी। आइए, हम देखते हैं कि विभिन्न दरबारों में मौजूद स्थानीय कलाकार, चित्रकला शैली के रूझानों को किस प्रकार व्यक्त कर रहे थे।

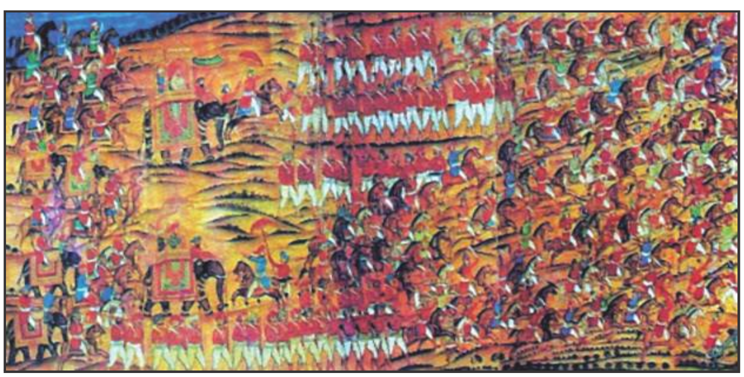

fp= 8 & JhjxiVue~ fLFkr nfj;k nkSyr egy dh nhokj ij njckjh fp=dkj }kjk cuk;k x;k fHkfÙkfp=

मैसूर के शासक टीपू ने अंग्रेजों की सांस्कृतिक परम्पराओं का विरोध करते हुये स्थानीय शैली एवं परम्पराओं को संरक्षण दिया। उनके महल की दीवारें स्थानीय कलाकरों द्वारा बनाये गये **fHkfÙk fp=** से सजे होते थे। चित्र 8 में एक भित्ति चित्र दिखाई दे रहा है। इस भित्ति चित्र में पोलिलुर के

प्रसिद्ध युद्ध के दृश्य को दर्शाया गया है, जिसमें मैसूर की सेना ने अंग्रेजों को करारी शिकस्त दी थी।

fHkfÙk fp=& nhokj ij cuk;k x;k fp=

बंगाल में स्थानीय कलाकारों को, अंग्रेजों की शैली एवं परम्परा को सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा था। चित्र 9 में एक जुलूस की तस्वीर है। स्थानीय कलाकार द्वारा बनाई गई इस तस्वीर में **ifjiz{; fof/k** का इस्तेमाल किया गया है। इस चित्र में नजदीक और दूर वाली चीजों के बीच दूरी का बोध कराने के लिए रोशनी और परछाई का उपयोग किया गया है।

fp= 9 & ef'kkZckn esa LFkkuh; dykdkj }kjk fufeZr [illegible] dk fp=

भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना हो जाने के बाद स्थानीय रियासतों के राजे–रजवाड़े और नवाब की स्थिति ऐसी नहीं रह गई थी कि वे कलाकारों को अपने दरबार की सेवा में रख सकें। ऐसे में चित्रकार भी काम की तलाश एवं रोजी–रोटी के लिए अंग्रेजों की शरण में जाने लगे। भारत आए अंग्रेज अधिकारी एवं व्यापारी भी ऐसी तस्वीरें बनवाना चाहते थे, जिससे कि वे भारत को समझ सके। इस प्रकार, हम देखते हैं कि स्थानीय कलाकारों ने पौधों, जानवरों, ऐतिहासिक इमारतों, पर्व–त्यौहारों, व्यवसायों, जाति और समुदायों की तस्वीरें बनाने लगे। इन चित्रों को 'कम्पनी चित्र' के नाम से जाना जाता है।

कई स्थानीय चित्रकार ऐसे भी थे, जो राजदरबार के प्रभावों से मुक्त स्थानीय परिवेश में चित्रकला की स्वतंत्र शैली एवं परम्परा के रूझानों को दर्शा रहे थे। ऐसे ही शैलियों में बिहार की 'मधुबनी पेंटिंग' एक प्रमुख चित्रशैली है। इसमें प्रकृति धर्म और सामाजिक संस्कारों के चित्रों को ग्रामीण परिवेश में उकेरा जा रहा था। आइए, हम देखते हैं, कि मधुबनी पेंटिंग के कलाकार ग्रामीण लोक चित्रकला के रूझानों को किस प्रकार व्यक्त कर रहे हैं।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

e/kcuh ifVx

इस लोक काल की ओर कला प्रेमियों एवं पारखियों का ध्यान उस समय आकृष्ट हुआ, जब 1942 ई. में लंदन की आर्ट गैलरी में 'मधुबनी पेंटिंग' की प्रदर्शनी लगाई गई। मधुबनी चित्रकला पूर्णतया एक महिला चित्रकला शैली है। वे इस चित्रकला को पीढ़ी–दर–पीढ़ी विरासत के रूप में छोड़ती गई। इस प्रकार, घर की दीवारों तथा आंगन के फर्श से कपड़ों और कागज पर इसका स्थानांतरण होता गया। अन्य लोक कलाओं की भांति मधुबनी चित्रकला भी विभिन्न पर्व–त्यौहारों, विवाह, पारिवारिक अनुष्ठानों के साथ जुड़ी है। मधुबनी चित्रकला के दो रूप हैं– भित्ति चित्र एवं अरिपन चित्र (भूमि चित्रण)। (चित्र–10)

भित्ति चित्रों में देवी–देवताओं, राधा–कृष्ण की लीला, राम–सीता के कथा के चित्रों को प्रमुखता से दर्शाया गया है। विवाह के अवसर पर घर के बाहर और भीतर की दीवारों पर रति और कामदेव के चित्र तथा पशु–पक्षी के चित्रों को प्रतीक के रूप में चित्रित किया जाता है।

अरिपन चित्रों में आंगन या चौखट के सामने जमीन पर बनाया जाने वाला चित्र है। इन्हें बनाने में पीसे हुये चावल को पानी और रंग में मिलाया जाता है। अरिपन चित्रों के अंतर्गत मनुष्य, पशु–पक्षी, पेड़, फूल, फल, स्वास्तिक, दीप आदि के चित्रों को उकेरा जाता है।

मधुबनी शैली के चित्रों में चित्रित वस्तुओं का मात्र सांकेतिक स्वरूप दिया जाता है। पहले के चित्र मुख्यतः दीवारों एवं फर्शों पर ही बनाये जाते थे। मगर कुछ वर्षों से कपड़े और कागज पर भी चित्रांकन की प्रवृत्ति काफी बढ़ी है। चित्रांकन की सामग्री के नाम पर बांस की कूची और विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक रंग होते हैं। ज्यादातर रंग वनस्पति से प्राप्त किये जाते हैं।

इस चित्रकला के प्रमुख कलाकारों में सिया देवी, कौशल्या देवी, शशिकला देवी, गंगा

देवी, भगवती देवी आदि के नाम लिये जा सकते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यह चित्रकला अपने स्थानीय परिवेश की सीमा को लांघते हुये देश–विदेश में काफी लोकप्रिय हुई है और इसकी प्रदर्शनियाँ आयोजित की गई। जापान के तोकामाची शहर में मधुबनी पेंटिंग का संग्रहालय बनाया गया है।

fp= 10 & e/kcuh isfVax

jk"Voknh fp=dyk 'kyh

उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक एवं बीसवीं सदी के प्रारंभ में जनसाधारण की तस्वीरों में राष्ट्रवादी संदेश दिये जाने लगे थे। राजा रवि वर्मा उन चित्रकारों में से एक थे, जिन्होंने राष्ट्रवादी कला शैली को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने तैल चित्रकारी की यूरोपीय कला शैली को अपने चित्रकारी का आधार बनाया। उन्होंने रामायण, महाभारत और पौराणिक कहानियों के नाटकीय दृश्यों को किरमिच पर चित्रांकित किया। उनके द्वारा बनाये गये चित्र कला प्रेमियों के बीच काफी लोकप्रिय हुये। चित्रों के प्रति लोगों के आकर्षण को देखते हुए राजा रवि वर्मा ने बम्बई (मुम्बई) में प्रिंटिंग प्रेस लगाई। यहाँ, उनके द्वारा बनाई गई तस्वीरों की छपाई बड़ी संख्या में होने लगी। अब आम लोग भी सस्ती कीमत पर उनके चित्रों को खरीद सकते थे।

fp= 11 & jktk jfo oekZ }kjk cuk;k x;k rSyfp= fp=

dykdkjk dk vk/kfud Ldy

उन्नीसवीं सदी के मध्य में भारत को पश्चिमी शिक्षा से लाभ दिलाने की शैक्षणिक नीति के अंतर्गत सरकार ने कलकत्ता, बम्बई, मद्रास और लाहौर में कला स्कूलों (आर्ट स्कूल) की स्थापना की। इन स्कूलों में कला के पाश्चात्य तरीकों को ही अध्ययन के विषय के रूप में रखा गया था। ई.वी. हैवेल मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट में कला के अध्यापक थे। उन्होंने अवनीन्द्रनाथ टैगोर के सहयोग से भारतीय चित्रकारों का एक अलग समूह बनाया, जिन्हें कलाकारों का आधुनिक स्कूल कहा गया। बंगाल के राष्ट्रवादी कलाकारों का समूह इनके साथ जुड़ने लगा। इस समूह के कलाकारों ने विषयों के चयन एवं तकनीक में अजंता के भित्ति चित्रों, मध्यकालीन लघुचित्रों एवं एशियाई कला आंदोलन को प्रोत्साहित करने वाले जापानी कलाकारों से प्रेरणा ग्रहण की।

,f'k;kbl dyk vkanksyu

tkikuh dykdkj vkdkdjk dkdtks u tkikuh dyk ij 'kk/k fd;k vkj ,d ,sls le; es tkikuh dyk dh ijsijkxr rduhdks dk cpkus dh t:jr ij cy fn;k tks fd if'peh 'kyh ds dkj.k [krjs es iMrh tk jgh FkhA mUgksus ;g ifjHkkf"kr djus dk i;kl fd;k fd vk/kfud dyk D;k gksrh gS vkj ijsijkvks dk cuk, j[kus rFkk vk/kfudhdj.k djus ds fy, D;k fd;k tkuk pkfg,A og tkikuh dyk vdkneh ds i/kku lsLFkkid FksA vkdkdjk us 'kkfrfudsru dk nkjk fd;k FkkA johUæukFk Vsxkj ,oa vouhUæukFk Vsxkj ij mudk xgjk iHkko FkkA

चित्र 12 को देखिए। अवनीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा बनाये गये इस चित्र में राजपूत लघुचित्र की शैली का प्रभाव देखा जा सकता है। चित्र 13 में, धुंधली पृष्ठभूमि में हल्के रंगों के उपयोग को देखा जा सकता है। इस चित्र शैली में जापानी कलाकारों के प्रभाव स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त हो रहे हैं। चित्र 14 नंदलाल बोस द्वारा बनाया गया है। इस चित्र में आप देख सकते हैं कि नंदलाल बोस ने अपनी तस्वीर में त्रिआयामी प्रभाव पैदा करने के लिए

छायाकरण का इस्तेमाल किया है। नंदलाल बोस के इस चित्र में अजंता की चित्रशैली के प्रभाव को साफ देखा जा सकता है।

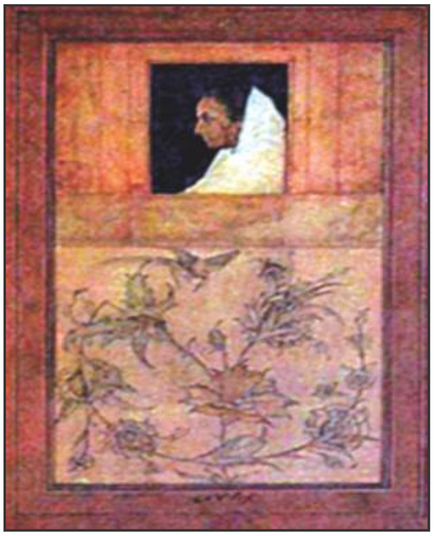

चित्र 12 –
मेरी माँ, अवनीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा चित्रित

चित्र 13 – कालिदास की कविता का निर्वासित यक्ष, अबनिंद्र नाथ द्वारा बनाया गया चित्र। यह शैली जापानी जलरंग की तस्वीरों में देखा जा सकता है।

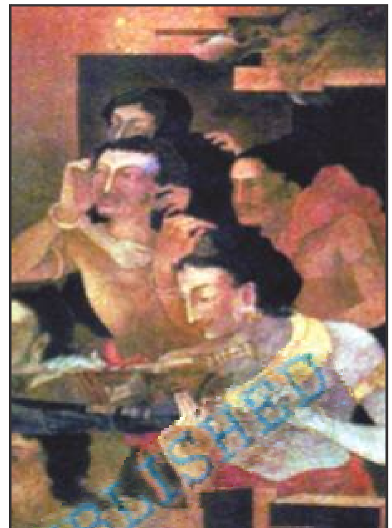

चित्र 14 – लाक्षागृह दाह (पांडवों के वनवास के दौरान लाक्षागृह के जलने का चित्र) नन्दलाल बोस द्वारा चित्रित। अजन्ता के चित्र शैली से प्रभावित

बीसवीं सदी के दूसरे दशक के बाद कलाकारों का एक पृथक समूह अवनीन्द्रनाथ के कलाशैली से भिन्न विचारों को प्रस्तुत किया। इस समूह के कलाकारों की मान्यता थी कि कलाकारों को प्राचीन कला रूपों के बजाय लोक कला एवं जनजातीय कला शैली से प्रेरणा ग्रहण करना चाहिए। जैसे–जैसे यह बहस और चलता रहा, वैसे–वैसे कला की नई शैलियों एवं परम्पराओं का विकास होता रहा।

& औपनिवेशिkd fp=dyk ,oa jk"Vªoknh fp=dyk esa vrj Li"V djsa

& ckWDl 7 ds bdkbZ 8 esa fpf=r y?kqfp=ksa dks ns[kdj fp= 12 dh rqyuk dhft,A D;k vkidks dksbZ lekurk&vlekurk fn[krk gS\

Hkou fuekZ.k dh ubZ 'kSyh vkSj ubZ bekjrsa

जब भारत में ब्रिटिश शासन को स्थिरता प्राप्त हुई। तब बुनियादी तौर पर रक्षा, प्रशासन, आवास और वाणिज्य जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भवनों एवं इमारतों की जरूरत पैदा होने लगी। उन्नीसवीं सदी से शहरों में बनने वाली इमारतों में किले, सरकारी दफ्तरों,

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

शैक्षणिक संस्थान, धार्मिक इमारतें, व्यावसायिक भवन आदि प्रमुख थीं। ये इमारतें अंग्रेजों की श्रेष्ठता, अधिकार, सत्ता की प्रतीक तथा उनकी राष्ट्रवादी विचारों का प्रतिनिधित्व भी करती है। आइए देखें कि इस सोच को अंग्रेजों ने किस तरह अमली जामा पहनाया।

सार्वजनिक भवनों के लिए मोटे तौर पर तीन स्थापत्य शैलियों का प्रयोग किया गया। इनमें से एक शैली को ''ग्रीकों–रोमन स्थापत्य शैली'' कहा जाता था। बड़े–बड़े स्तंभों के पीछे रेखागणितीय संरचनाओं एवं गुम्बद का निर्माण इस शैली की विशेषता थी (आप चित्र 15 को देखें)। यह शैली मूल रूप से प्राचीन रोम की भवन निर्माण शैली से निकली थी, जिसे यूरोपीय पुनर्जागरण के दौरान पुनर्जीवित किया गया। अंग्रेजों ने इस शैली का प्रयोग भारत में शाही वैभव की अभिव्यक्ति के लिए किया था।

fp= 15 & lsV'y ikLV vkfQl dydÙkk

एक और शैली जिसका काफी उपयोग किया गया वह 'गॉथिक शैली' थी। ऊँची उठी हुई छतें, नोकदार, मेहराबें, बारीक साज–सज्जा इस शैली की विशेषता थी। गॉथिक शैली का प्रयोग सरकारी इमारतों शैक्षणिक संस्थानों एवं गिरजाघरों में व्यापक पैमाने पर किया गया।

fp= 16 & foDVkfj;k Vfeul jyo LV'ku cEcb

उन्नीसवीं सदी के आखिर में और बीसवीं सदी की शुरुआत में एक नई मिश्रित स्थापत्य शैली विकसित हुई, जिसमें भारतीय एवं यूरोपीय शैलियों के तत्व विद्यमान थे। इस शैली को

fp= 17 & enkl yk dkV

'इंडो–सारासेनिक शैली ' का नाम दिया गया था। 'इंडो' शब्द हिन्दू का संक्षिप्त रूप था जबकि 'सारासेन' शब्द का प्रयोग यूरोप के लोग मुसलमानों को संबोधित करने के लिए करते थे। भारत की मध्यकालीन इमारतों– गुंबदों, छतरियों, जालियों, मेहराबों से यह शैली प्रभावित थी। भारतीय शैली को समावेश करके अंग्रेज यह साबित करना चाहते थे कि वे यहाँ के वैद्य एवं स्वाभाविक शासक हैं।

यूरोपीय ढंग की दिखने वाली इमारतों एवं भवनों से औपनिवेशिक स्वामियों और भारतीय प्रजा के बीच के अंतर को प्रदर्शित करती है। शुरुआत में ये इमारतें परंपरागत भारतीय इमारतों एवं भवनों के मुकाबले अजीब सी दिखाई देती थी। लेकिन धीरे–धीरे भारतीय भी यूरोपीय स्थापत्य शैली के आदि हो गए और उन्होंने इसे अपना लिया। दूसरी तरफ अंग्रेजों ने अपनी जरूरतों के मुताबिक कुछ भारतीय शैलियों को अपना लिया। इसकी एक मिसाल उन बंगलों को माना जा सकता है, जिन्हें पूरे देश में सरकारी अफसरों के आवास के लिए बनाया जाता था। बंगाल के परंपरागत फूँस की बनी झोपड़ी को अंग्रेजों ने उसे अपनी जरूरतों के हिसाब से बदल लिया था। औपनिवेशिक बंगला एक बड़ी जमीन पर बना होता था। परंपरागत ढलवां छत, चारो तरफ बना बरामदा और उसके पीछे घर बना होता था। बंगले के परिसर में घरेलु नौकरों के लिए अलग से क्वार्टर होते थे।

fp= 18 & mUuhloha lnh dk ,d cxyk

& vki viuh xk¡o] dLck ,oa 'kgj esa fLFkr Hkou ,oa bekjrksa dh lwph crk,¡ ,oa ;g crk,¡ fd mudk fuekZ.k fdl LFkkiR; 'kSyh esa gqvk gSA

lkfgR; esa jk"Vªoknh fopkj

भारतीय स्वाधीनता संघर्ष (इसकी चर्चा अगले इकाई में करेंगे) में साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में जब राष्ट्रवादी विचार उभार लेने लगा, तब विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों ने साहित्य को देश भक्तिपूर्ण उद्देश्यों के लिए

प्रयोग में लाने लगे। दरअसल इनमें से अधिकांश साहित्यकारों का यह विश्वास था कि वे गुलाम देश के नागरिक हैं। अतः उनका यह कर्तव्य है कि वे इस प्रकार के साहित्य का सृजन करें जो उनके देश की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेगा। साहित्य में पराधीनता के बोध तथा स्वतंत्रता की जरूरत को स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलने लगी थी। इतना ही नहीं, साहित्य ने देश की आजादी के लिए जनसाधारण को हर प्रकार से बलिदान करने के लिए उत्प्रेरित किया। सुविधा की दृष्टि से हमारी चर्चा मुख्य रूप से तीन भाषाओं– बांगला, हिन्दी एवं उर्दू तक सीमित होगी।

ckXyk lkfgR;

आधुनिक बांग्ला साहित्य के महान् साहित्यकार बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय (1838–1894) के उपन्यास अपने देशवासियों में देशभक्तिपूर्ण भावनाओं को जाग्रत करने में लगे हुये थे। उन्होंने देशवासियों को अपने देश की मौजूदा दयनीय स्थिति के कारणों पर विचार करने के लिए बाध्य किया। अपने प्रसिद्ध गीत 'वन्दे मातरम्' के साथ 'आनंदमठ' देशभक्तों के लिए प्रेरणास्रोत बन गया। 'आनंदमठ', आजादी के उन दीवाने देशभक्त और क्रांतिकारी व्यक्तियों की गाथा है, जो वंदेमातरम् का जयघोष करते हुए देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया।

^vkfFkd jk"Vokn* के प्रवर्तक के रूप में विख्यात रमेश चन्द्र दत्त (1848–1909) को अपनी रचना की प्रेरणा उन्हें **^lkfgR;d n'kHkfDr*** से मिली थी। रमेश चन्द्र दत्त, ऐसे हिन्दू थे जिन्हें अपनी परम्परा एवं संस्कृति से लगाव था। उन्होंने अपने उपन्यास 'समाज' में प्राचीन भारतीय अतीत को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने इस उपन्यास में ऐसे भारतीय राष्ट्रवाद का चित्रण किया है जो हिन्दुओं पर केन्द्रित था। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि रमेश चन्द्र सम्प्रदायवादी थे। यहाँ हिन्दू आदर्श को प्रस्तुत करने के पीछे इस बात को प्रकाश में लाना था कि उस समय भारतीय राष्ट्रवाद में ऐसी संभावनाएँ निहित थीं जो सम्प्रदायिक प्रवृत्तियों को जन्म दे सकती थीं। अतः रमेश चन्द्र को उनके समय की प्रवृत्तियों को अभिव्यक्ति देने वाले प्रतिनिधि के रूप में देखा और समझा जाना चाहिए।

vkfFkd jk"V'okn %&   vxt h 'kklu dh vkfFkd vkykpuk d ekè;e l Hkkjrh; jk"V'okn dh vkfFkd cfu;kn r;kj dju dk i;kl A

lkfgfR;d n'kHkfDr %&n'kHkfDr i.k fopkjk dh vfHk0;fDr d fy, lkfgR; dk ekè;e cukukA

बांग्ला उपन्यासकार ताराशंकर बंद्योपाध्याय (1898—1971) की 1947 से पूर्व की रचनाओं पर दृष्टि डालना काफी उपयोगी होगा। विशेषकर 'गणदेवता' एवं 'पंचग्राम' उपन्यास में उन्होंने शोषण एवं औद्योगिकीकरण के कारण ग्रामीण समाज के विघटन को दिखाया है। इस शोषण एवं उत्पीड़न के विरुद्ध निर्धन ग्रामीणों के संघर्ष का भी वर्णन किया है, जो अन्ततः असफल होता है। यह असफलता इसलिए नहीं कि प्रभावी वर्ग शक्तिशाली था। बल्कि इसलिए कि औद्योगिकीकरण की वास्तविकता के समक्ष ग्रामीण सामाजिक जीवन एवं अर्थव्यवस्था टिकी नहीं रह सकती।

fgUnh lkfgR;

भारतेन्दु (1850—1885) हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग के प्रवर्तक रहे हैं। अपने देश और समाज से लोगों को अवगत कराने के लिए उन्होंने विभिन्न साहित्यिक विद्याओं—कविता, नाटक, निबंध लिखा। भारतेन्दु द्वारा सृजित साहित्य का एक बड़ा भाग पराधीनता के प्रश्न से संबंधित है। अपने प्रसिद्ध नाटक 'अंधेर नगरी चौपट राजा' एवं 'भारत दुर्दशा' में उन्होंने अंग्रेजी शासन के शोषक चरित्र को उजागर करने के लिए ऐसी लोक कथा का उपयोग किया, जो देश के विभिन्न भागों में सामान्य रूप से प्रचलित थी। अनेक राष्ट्रवादी नेताओं एवं लेखकों ने भारतीय धन के लूट के माध्यम से ब्रिटिश शासन के शोषण का पर्दाफाश किया। भारतेन्दु ने भी कविता के माध्यम से भारतीय धन के लूट को इस प्रकार व्यक्त किया है।

dy d dy cy Nyu lk Ny br d ykx

fur&fur /ku lk ?kVr g c<r g n%[k lkxAA

मारकीन मलमल बिना चलत कुछ नहिं काम

परदेशी जुलाहन के मानहु भये गुलाम।।

——

भीतर–भीतर सब रस चूसै।
हंसि हंसि के तन–मन–धन मुसै।
जाहिर वातन में अति तेज।
क्यों राखि साजन नहिं अंगरेज।

बीसवीं सदी के प्रारंभिक दो दशकों तक शोषण, आजादी एवं पराधीनता के प्रति वैचारिक रवैया आम तौर पर वही था, जो उन्नीसवीं सदी के दौरान उभरा था। लेकिन प्रथम विश्व युद्ध (1914–18) के बाद परिस्थितियाँ तेजी से बदलीं। अब मुद्दा केवल भारत की स्वतंत्रता का नहीं रहा वह तो किसी भी कीमत पर लेनी ही थी। अब स्वाधीनता का मूल अर्थ और मुख्य उद्देश्य चर्चा का मुख्य आधार बन गये और 'आजादी किसके लिए' जैसे प्रश्न उठने लगे। जैसा कि प्रेमचंद की एक कहानी 'आहूति' में रूपमति कहती है– ''कम से कम मेरे लिए स्वराज का यह अर्थ नहीं है कि जॉन की जगह गोविन्द बैठ जाए। जिन बुराइयों को दूर करने के लिए आज हम प्राणों को हथेली पर लिये हुए हैं, उन्हीं बुराइयों को क्या प्रजा इसलिए सिर चढ़ायेगी कि वे विदेशी नहीं, स्वदेशी हैं। अगर स्वराज आने पर भी संपत्ति का यही प्रभुत्व रहे और पढ़ा लिखा समाज यों स्वार्थान्ध बना रहे तो मैं कहूँगी, ऐसे स्वराज का न आना ही अच्छा।''

प्रेमचंद ने राष्ट्रवादी नेताओं के स्वार्थपरता एवं भोग–विलास का स्पष्ट रूप से पर्दाफाश किया है। उनका मानना था कि यदि देश के नेता सही नहीं होंगे तो भारत की स्वाधीनता का क्या लाभ? प्रेमचंद के उपन्यास 'गबन' (1931) में इस चिंता के महत्व को उजागर किया गया है। देवीदीन जो एक पक्का राष्ट्रवादी है, नेताओं से कहता है– ''अभी जब तुम्हारा राज नहीं है, तब तो तुम भोग–विलास पर इतना मरते हो। जब तुम्हारा राज हो जायेगा तब तो तुम गरीबों को पीस कर पी जाओगे।''

Developed by: SOL www.absol.in

लेकिन राष्ट्रवादी राजनीति का सबसे निराशाजनक पहलु 'गोदान' में परिलक्षित होता है। राय साहब जो कि एक धनी जमींदार है, सत्याग्रह में शामिल होते हैं तथा बेईमानी से उद्देश्यपूर्ति के लिए धन का उपयोग करते हैं। खन्ना, जो कि महाजन, व्यापारी और उद्योगपति हैं, आंदोलन में भाग लेकर फिर ऐसे तरीकों से धन बनाने में लग जाते हैं जिन्हें जायज नहीं कहा जा सकता। ओंकारनाथ पत्रकार हैं जो अपने संपादकीय लेखों में आग उगलते हैं लेकिन बुनियादी रूप में स्वार्थी हैं जिनके लिए राष्ट्रवाद स्वार्थ पूर्ति का एक साधन है।

& lkfgR; esa fdu jk"Vªoknh rRoksa dk mtkxj fd;k x;k gS] d{kk esa ppkZ djsa\

mnZw Hkk"kk

आपने मध्यकाल के इतिहास को पढ़ते समय यह जाना कि एक साझा संस्कृति का देश में विकास हुआ जिसे गंगा–जमुना संस्कृति भी कहा जाता है। इसके अनेक उदाहरणों में उर्दू भाषा भी शामिल है। उर्दू भाषा की उत्पत्ति पंजाब के क्षेत्र में ग्यारहवीं शताब्दी ई. में हुई और मध्यकाल में इसका धीरे–धीरे विकास हुआ। अठारहवीं शताब्दी तक यह एक साहित्यिक भाषा बन चुकी थी जिसमें फारसी और कुछ भारतीय भाषाओं के शब्द शामिल थे। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब राष्ट्रीय आंदोलन ने जोर पकड़ा तो उत्तर भारत में सबसे अधिक प्रचलित भाषा उर्दू ही थी, जिसे हम 'हिन्दुस्तानी' भी कहते हैं। शायद आप जानते हैं कि उर्दू और हिन्दी के बहुत सारे शब्द समान हैं और इनमें मुख्य अंतर लिपि का है। हिन्दी देवनागरी लिपि में, और उर्दू फारसी लिपि में उस समय लिखी जाती थी।

दिलचस्प बात यह है कि उस समय उत्तर भारत में अधिकतर समाचार–पत्र और पत्रिकाएं उर्दू भाषा में ही प्रकाशित होते थे। 1857 के संघर्ष के समय दिल्ली से प्रकाशित होने वाले ''देहली अखबार'' और लखनऊ से प्रकाशित ''तिलिस्म'' जैसे अखबार आज प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत हैं। राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेता, मौलाना अबुल कलाम आजाद ने उर्दू में कई समाचार–पत्र निकाले जिनमें ''अल–हिलाल'' और ''अल–बलाग'' काफी महत्वपूर्ण

थे। इनके अलावा भी कई दूसरे अखबार उर्दू में निकाले जाते थे जिनके माध्यम से देश–प्रेम की भावना का प्रचार हुआ और अंग्रेजों के शासन के अन्याय और दमन के खिलाफ लोगों में चेतना जगायी गयी। आप जानते होंगे कि ''इंकलाब जिन्दाबाद'' (क्रांति अमर रहे) का नारा उर्दू जबान का ही है।

उर्दू भाषा के अखबारों के साथ–साथ उर्दू कविता के माध्यम से भी देश–प्रेम और सामाजिक सौहार्द का पैगाम घर–घर पहुँचाया गया। बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में अल्लामा इकबाल ने **^lkjs tgk¡ ls vPNk fgUnksLrk¡ gekjk**** कविता की रचना की, तो पटना के बिस्मिल अजीमाबादी ने लिखा–

ljQjks'kh dh reUuk vc gekjs fny esa gS
ns[kuk gS tksj fdruk cktw, dkfry esa gSA

ऐसी अनेक मिसालें आपको देखने को मिलेंगी जब देश की आजादी के लिए प्राण निछावर करने वालों ने ऐसे शेर और गीत दुहराते हुए मौत को गले लगाया। उर्दू भाषा आज भी लोकप्रिय है और हमारी दूसरी सरकारी भाषा भी है।

vH;kl

vkb;s fQj ls ;kn djsa%

1- lgh ;k xyr crk,¡%

(i) साहित्य में पराधीनता के बोध एवं स्वतंत्रता की जरूरतों को स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलने लगी थी।

(ii) प्रेमचंद ने 'आनंदमठ' की रचना की थी।

(iii) रमेश चन्द्र दत्त के उपन्यास में हिन्दू समर्थक प्रवृति देखने को मिलती है।

(iv) भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने भारतीय धन के लूट को नाटक के माध्यम से पर्दाफाश किया है।

(v) 'वंदे मातरम्' गीत की रचना बंकिमचन्द्र चटर्जी ने की थी।

2- fjDr LFkkuk dk Hkjs%

(क) लकड़ी या धातु के छापे से कागज पर बनाई गई तस्वीर को .... कहा जाता है।

(ख) औपनिवेशिक काल में बनाये गये छविचित्र .... होते थे।

(ग) अंग्रेजों की विजय को दर्शाने के लिए .... की चित्रकारी की जाती थी।

(घ) एशियाई कला आंदोलन को प्रोत्साहित करने वाले .... कलाकार थे।

3- fuEufyf[kr dk tkMs cuk,%

(क)	सेन्ट्रल पोस्ट ऑफिस कलकत्ता	(i)	गोथिक शैली
(ख)	विक्टोरिया टर्मिनस रेलवे स्टेशन बम्बई	(ii)	इंडो सारासेनिक शैली
(ग)	मद्रास लॉ कोर्ट	(iii)	इंडो ग्रीक शैली

vkb, fopkj djs%

(i) मधुबनी पेंटिंग किस प्रकार की कला शैली थी। इसके अंतर्गत किन विषयों को ध्यान में रखकर चित्र बनाये जाते थे?

(ii) ब्रिटिश चित्रकारों ने अंग्रेजों की श्रेष्ठता एवं भारतीयों की कमतर हैसियत को दिखाने के लिए किस तरह के चित्रों को दर्शाया है?

(iii) 'उन्नीसवीं सदी की इमारतें अंग्रेजों की श्रेष्ठता, अधिकार, सत्ता की प्रतीक एवं उनकी राष्ट्रवादी विचारों का प्रतिनिधित्व करती है।' इस कथन के आधार पर स्थापत्य कला शैली की विशेषताओं का वर्णन करें?

(iv) साहित्यिक देशभक्ति से आप क्या समझते हैं। विचार करें?

(v) 'मॉडर्न स्कूल ऑफ आर्टिस्टस से जुड़े भारतीय कलाकारों ने राष्ट्रीय कला को प्रोत्साहित करने के लिए किन विषयों को चयन किया। चित्र 12, 13, 14 के आधार पर वर्णन करें?

vkb, djd n[k

(i) आप अपने गाँव या शहर के आस–पास मौजूद भवन निर्माण शैली पर ध्यान दें, जो पाठ में दिये गये भवन एवं इमारत से मिलती–जुलती हो। आप उस भवन का एक स्केच तैयार कर उसकी निर्माण शैली की विशेषताओं का वर्णन करें?

(ii) विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रकाशित राष्ट्रीय विचारों को प्रोत्साहित करने वाले कविता, कहानी, गीत का संकलन कर उसे कक्षा में प्रदर्शित करें?

Developed by: SOL www.absol.in